IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक और शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

मनप्रीत कौर

शोधकर्त्री (एम.एड) .

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, .

कुरूक्षेत्र

डॉ. ज्योति खजूरिया

असिस्टैंट प्रोफेसर

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

कुरूक्षेत्र

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानंद जी के दार्शनिक और शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना है| स्वामी विवेकानंद जी एक अध्यात्मिक प्रबुद्ध तपस्वी थे| प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक है |इसका मुख्य आधार शैक्षिक विचार तथा साहित्य है| शोध कार्य में तथ्यों का संग्रह प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है| इनके मतानुसार शिक्षा को चरित्र निर्माण और मानव निर्माण के साथ-साथ तर्क करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए| इनके विचार हर संस्कृति के लिए हैं| साथ में, इनके विचार भारत देश में आधुनिक शिक्षा के पुनर्निर्माण का सर्वोत्तम आधार है| इन्होंने अपने पूरे जीवन में वेदों पर विचार किया जिसमें आत्मज्ञान, आत्मनिर्भरता, निडरता और एकाग्रता का अभ्यास शामिल है| स्वामी विवेकानंद उस शिक्षा को चाहते हैं जिससे बुद्धि का विस्तार होता है और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होता है| आज की शिक्षा हमें एक तरह के भौतिकवाद की दिशा में भटकाती है, जो लोगों को उच्च और निम्न बताती है| हमारी वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बनाने के लिए उच्च अंक प्राप्त करना है| अधिकतम उद्देश्य केवल धन को अर्जित करना है| शिक्षा को आत्मसात करना नहीं है| इसलिए मूल्य आधारित शिक्षा को फिर से शुरू करने की आवश्यकता है, हमारी शिक्षा प्रणाली के ताने-बाने को नया स्वरूप प्रदान करने के लिए| एक बच्चे का दिमाग कोरे कागज की तरह होता है, और इस पर कुछ भी लिखा जा सकता है| इसलिए, मूल्य शिक्षा को सही समय और सही उम्र में प्रदान किया जाए ताकि बच्चे के दिमाग पर पड़ा प्रभाव जीवन भर मार्गदर्शन कर सकें| ऐसा जीवन निश्चित तौर पर नैतिक और न्यायपूर्ण सिंद्धातों पर आधारित होगा|

मुख्य बिंदू -- विवेकानंद जी के शैक्षिक विचार, स्वामी जी अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, आज की शिक्षा और स्वामी जी के वर्तमान शिक्षा पर शैक्षिक निहितार्थ

परिचय

स्वामी विवेकानंद स्वयं में ही दर्शन हैं, जिसने दुनिया को प्रभावित किया है| इन्होंने मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं पर गहन चिंतन किया है| इनकी चिंता का क्षेत्र धर्म, दर्शन, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली, महिलाओं की स्थिति, राष्ट्र का सम्मान और कई अन्य क्षेत्र थे | विभिन्न समस्याओं पर उनके विचारों ने देश को नई दिशा प्रदान की| स्वामी जी कहते हैं कि शिक्षा आंतरिक आत्मा की खोज है| ये शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में विश्वास करते हैं| स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है" अर्थात पूर्णता पहले से ही मनुष्य में निहित होती है और शिक्षा उसी की अभिव्यक्ति है| स्वामी जी के कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य कोई भी ज्ञान बाहर से प्राप्त नहीं करता, यह ज्ञान उसके अंदर पहले से ही विद्यमान होता है| बाहरी अध्यापक केवल सुझाव देता है, जिससे भीतरी अध्यापक समझने और सीखने के लिए प्रेरित करता है| स्वामी जी अनुसार शिक्षा स्वयं को जानने से है| लेकिन आज की शिक्षा हीन भावना को बढ़ा रही है छात्र समझने की बजाय उलझते जा रहे हैं| ऐसी शिक्षा को शिक्षा नहीं कहा जा सकता|

समस्या कथन

स्वामी विवेकानंद जी के दार्शनिक और शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन|

अध्ययन के उद्देश्य

- स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना| .
- स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना|

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्रोत (इनके द्वारा लिखित पुस्तकें) और द्वितीयक स्रोत (शोध–पत्र, समाचार पत्र) का उपयोग किया गया है|

अध्ययन की परिसीमाएं

- प्रस्तुत शोध में स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक दर्शन का ही अध्ययन किया गया है|
- प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है|

स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचार

कहते हैं कि एक गरीब शिक्षक बताता है, एक औसत शिक्षक समझाता है, एक अच्छा शिक्षक प्रदर्शन करता है, एक महान शिक्षक प्रेरित करता है| स्वामी विवेकानंद जी एक महान शिक्षक होने के साथ–साथ महान शिक्षाविद भी थे| इन्होंने अपने समय की शिक्षा का विरोध किया| उन्होंने माना कि स्कूलों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा मनुष्य बनाने वाली शिक्षा नहीं है| यह कुछ नहीं सिखाती, केवल जानकारियों का ढेर देती है जो आत्मसात हुए बिना मस्तिष्क में पड़ा रहता है| इनके अनुसार शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, इसमें भौतिक, नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन के सभी पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए| इन्होंने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि "यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोश ऋषि बन जाते"| विवेकानंद जी शिक्षा को मानव जीवन का अंग मानते हैं| असली शिक्षा वह है जो मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा करती है| स्वामी जी कहते हैं शिक्षा का उद्देश्य आत्मविश्वास और आत्मसाक्षात्कार का निर्माण करना और मनुष्य को उसकी छिपी शक्तियों के प्रति जागरूक करना चाहिए| साथ ही में, विवेकानंद जी ने आंतरिक ज्ञान की खोज पर जोर दिया है| जब तक आंतरिक शिक्षा नहीं खुलती, तब तक बाहरी शिक्षा व्यर्थ है|

शिक्षा के उद्देश्य

1. अंतर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अंतर्निहित ज्ञान या पूर्णता को प्राप्त करना है| इनका मत था कि सभी भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान पहले से ही अज्ञानता से ढके हुए मनुष्य में मौजूद हैं| शिक्षा के माध्यम से इस आवरण को हटा देना चाहिए ताकि ज्ञान धीरे–धीरे से एक जलती हुई मशाल (दीप्तिमान मशाल) के रूप में जलती रहे|

2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास

शिक्षा का उद्देश्य बच्चे का मानसिक एवं बौद्धिक रूप से विकास करना है| ताकि बच्चा अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद दूसरों पर निर्भर होने की बजाय आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा हो सके| साथ ही, एक बौद्धिक रूप से विकसित नागरिक के रूप में राष्ट्रीय विकास और उन्नति को बढ़ावा देने में सक्षम हो सकें|

3 मनुष्य का निर्माण करना

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना भी है| सभी प्रकार के अभ्यासों का अंतिम उद्देश्य मानव का विकास करना है, जिससे मनुष्य की इच्छाशक्ति का प्रवाह संयमित होकर फलदायी बन सकें|

4 चरित्र निर्माण

चरित्र मनुष्य की प्रवृत्तियों का योग होता है| हम वही होते हैं जो हमारे विचारों ने हमें बनाया है| इसलिए शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन की कुरीतियों को दूर करना होना चाहिए| स्वामी जी ने कहा कि "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है|"

5. आत्मविश्वास पैदा करना

एक व्यक्ति के अंदर कई गुण हो सकते हैं| शिक्षा उन्हें गुणों के प्रति जागरूक करने के लिए है| इस चेतना से वह किसी भी ऊंचाई तक पहुंच सकता है| स्वामी जी ने कहा है– "उठो! उठो! और तब तक मत रुको जब तक अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए|" विवेकानंद जी शिक्षा के माध्यम से छात्रों में आत्मविश्वास की भावना पैदा करना चाहते हैं|

6. धार्मिक विकास

स्वामी जी के अनुसार धार्मिक विकास शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य है| इसके लिए, प्रत्येक व्यक्ति को अपने में निहित धार्मिक तत्व को खोजने और विकसित करने में सक्षम होना चाहिए| इसके लिए इन्होंने मन और हृदय के प्रशिक्षण पर बल दिया है और कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा बालक में आज्ञा पालन, समाज–सेवा, संत व महात्माओं के अनुकरणीय आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की क्षमताओं का विकास हो सके|

7. सार्वभौमिक भाईचारा को बढ़ावा देना

मानव जाति के प्रति स्वामी विवेकानंद जी का प्रेम कोई भौगोलिक सीमा को नहीं जानता था| इन्होंने हमेशा से ही सभी देशों के बीच सद्भाव और अच्छे संबंधों को बढ़ावा देने के लिए अनुरोध किया| स्वामी जी विश्व के प्रत्येक प्राणी में, चाहे वह गरीब या अमीर, कमजोर या दुखी, बड़ा या छोटा हो, सर्वव्यापी व सर्वज्ञ आत्मा का निवास मानते हैं| इसलिए इन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से असमानता और अलगाव की दीवारों को गिराते हुए सार्वभौमिक भाईचारे के विचार तक पहुंचना चाहिए|

शिक्षक

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार:–

- शिक्षक को उच्च चरित्र आत्मज्ञानी, परिश्रम करने वाला, संयमी ही होना चाहिए|
- शिक्षक के पास भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए|
- शिक्षक को बालक की ज्ञान–प्राप्ति के मार्ग में आने वाली समस्याओं को दूर करने वाला होना चाहिए|

विद्यालय

स्वामी विवेकानंद जी गुरु गृह (गुरुकुल) प्रणाली के पक्षधर हैं| इन्होंने इस बात पर बल दिया कि स्कूल प्रकृति की गोद में, शहर के कोलाहल से दूर और शुद्ध वातावरण में होना चाहिए| इसमें अध्ययन–अध्यापन, खेलकूद, व्यायाम के अतिरिक्त ध्यान संबंधी क्रियाएं भी करवाई जानी चाहिए|

शिक्षण विधियां

शिक्षा प्रदान करने के लिए निम्नलिखित शिक्षण विधियों पर बल दिया गया|

. तर्क वितर्क विधि
. विचार–विमर्श विधि
. अनुकरण विधि
. व्यक्तिगत निर्देशन विधि
. केंद्रीय करण विधि

आज की शिक्षा (वर्तमान शिक्षा)

आज संसार कई तरह के भारी संकटों से जूझ रहा है| जैसे अपराध, संघर्ष, एक समुदाय और दूसरे समुदाय के बीच नफरत और अविश्वास, भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी, संसाधनों की कमी, पर्यावरण प्रदूषण, वनों की कटाई, आतंकवाद, निरक्षरता आदि| दुनिया आज हिंसा से भरी है| आज की शिक्षा हमें भौतिकवाद की दिशा में भटकाती है, जिसे सिर्फ लोगों का विभाजन उच्च और निम्न के बीच होता है| जहां भारतीय शिक्षा ने मानवता में एकता और सद्भाव स्थापित किया| वहीं वर्तमान में, आधुनिक भौतिकवादी समाज में नैतिक मूल्यों का कोई उचित स्थान नहीं है| हमारी सामाजिक व्यवस्था जातीय व संप्रदायिक संघर्षों से भरी पड़ी है| अन्य व्यवस्था प्रणाली की तरह शिक्षा प्रणाली भी नैतिक मूल्यों से वंचित हो गई है| आज की शिक्षा गैर–कार्यात्मक और प्रेरणाहीन है| आज भी शिक्षा का उद्देश्य उच्च अंक प्राप्त कॉलेजों में प्रवेश दिलाना है| शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण से बदलकर मार्क स्कोरिंग (Mark Scoring) रह गया है|

वर्तमान समय में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उतनी ही मूल्यवान है जितनी की उस युग में थी| इनके विचारों को शिक्षा प्रणाली में जगह देकर शिक्षा को काफी सुधारा जा सकता है| आज की शिक्षा का उद्देश्य केवल रटना और विभिन्न प्रकार की जानकारियों को बिना समझे याद करना प्रधान हो गया है| यह सब उच्च अंक, कागजी डिग्रियां और कॉलेजों में प्रवेश प्राप्त करना शिक्षा के उद्देश्य बन गया है| स्वामी जी के अनुसार शिक्षा के ऐसे मापदंड प्रस्तुत किए जाए जो स्पष्ट व असली मूल्यों को आंकने में मदद करें| जिससे आने वाली पीढ़ी सही व परिष्कृत मार्ग पर अग्रसर हो सकें| साथ ही, नवयुवकों में नई संजीवनी का संचार कर सकें|

शैक्षिक निहितार्थ

1. शिक्षा में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का विकास होना चाहिए|
2. शिक्षा को जिज्ञासा, निडरता और राष्ट्रीय सोच पैदा करनी चाहिए|
3. शिक्षा को सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा देना चाहिए|
4. शिक्षा को रोजगार सुनिश्चित करना चाहिए|
5. शिक्षा को आत्म–साक्षात्कार को बढ़ावा देना चाहिए|

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद जी एक महान शिक्षाविद थे और उन्होंने शिक्षा के लगभग पूरे क्षेत्र में क्रांति ला दी थी| इनके शैक्षिक विचार वेदांत के शाश्वत सत्य से अत्यधिक प्रभावित थे| उन्होंने शिक्षा के अपने क्रांतिकारी विचारों से लाखों भारतीय युवाओं को प्रेरित किया व उनके रक्त में एक नया जोश भर दिया| उनका सुझाव है कि मानव जाति की सभी समस्याओं का समाधान व्यापक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से है| शिक्षा के लिए इनका व्यवहारिक उन्मुख दृष्टिकोण विज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान व प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग के लिए अत्यधिक उपयुक्त है|

संदर्भ

- अग्रवाल,पी.(2000) "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन में पूर्व और पश्चिम का सम्मिश्रण और शिक्षा से इसका संबंध;" कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
- शर्मा ,डॉ० आर ए,(2014)"शिक्षा के दार्शनिक और सामाजिक मूल आधार" ,आर•लाल बुक डिपो, मेरठ
- रानी, यू०(1997) "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का शिक्षा में योगदान का अध्ययन",रोहतक महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय
- गुप्ता, एल० के०(2015) "स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचार";
- राय, जे०एस;(2014) "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार"
- गुप्ता,एल. के.(2018) "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार",
- https://internationaljournalofresearchpaper-swamivivekanand.